>

Title: Regarding the deteriorating condition of the farmers of Kawar lake in Begusarai in Nawada Parliamentary Constituency of Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): माननीय सभापति महोदय,

शिकस्ता कब्रों की लाशें भी मुझसे बेहतर हैं

कम से कम उन्हें कयामत का इंतजार तो है।

1988-89 में भारत सरकार ने वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने दिनकर की जन्म भूमि बेगुसराय जो 15000 एकड़ जमीन है, पक्षी विहार के रूप में घोषणा की थी। वहां साइबेरिया, ऑस्ट्रेलिया और दूसरे देशों से पक्षी आकर प्रजनन करते थे। वहां जल था, मछुआरे मछली मारते थे। लेकिन पिछले 25 वर्षों से जल की एक बूंद भी नहीं है तब भी यह पक्षी विहार बना हुआ है। 15000 एकड़ जमीन पर किसान खेती कर रहे हैं। यहां गेहूं, मकई, सरसों की खेती है। रुपसी तितलियां गेहूं के गोरे गालों पर बलखाती, नाचती और थिरकती हैं। सरसों के फूल पर मधुमक्खियां मकरंद चुराकर मधु बनाती हैं। किसानों की किशोरी बालाएं पायलों की झनकार के साथ खेत की मेहड़ों पर नाचती हैं, कूदती हैं और फसल काटती हैं। भारत सरकार ने यह सब वर्जित कर दिया है।

सभापति महोदय, अगर यहां जल रहता, पक्षी विहार होता तो हमें कोई एतराज नहीं था। आज किसान विहार की जरूरत है। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि काबर झील हमारी बेटियों के सुहाग का सिंदूर है, मां के तन के कपड़े हैं, बच्चों की रोटी हैं, पेट की रोटी हैं, बच्चों की कलम और पेंसिल हैं, दूध है। अगर किसानों को अपनी जमीन पर बिना अधिग्रहण और मुआवजे के रोकने की चेष्टा हुई तो मैं सोवरन सदन में बहुत जिम्मेदारी से कहना चाहता हूं कि बेगुसराय को सिंगूर के रास्ते में जाना पड़ेगा। हम नहीं चाहते कि इस तरह की बात हो। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि पक्षी विहार नहीं बल्कि किसान विहार के रूप में काबर झील को घोषित किया जाए। किसानों के हित में कदम उठाएं जाएं और उनकी जमीन लौटाई जाए।

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): मैं अपने आपको इस मामले के साथ संबद्ध करता हूं।